अध्याय

21

तेलंगाणा राज्य के गठन हेतु आंदोलन

(The Movement for the Formation of Telangana State)

तेलंगाणा के लोगों द्वारा जल, निधि और रोज़गार के लिए किये गये एक लंबे संघर्ष के बाद 2 जून, 2014 को तेलंगाणा ने भारतीय संघ में पूर्ण विकसित राज्य का दर्जा प्राप्त किया। इस अध्याय में हम इस प्रक्रिया के बारे में पढ़ेंगे।

- आप या आपके परिवार के सदस्यों ने इस आंदोलन को देखा होगा या इसमें भाग लिया होगा। कक्षा में अपने अनुभवों की चर्चा कीजिए। आपके विचार में तेलंगाना के एक पृथक राज्य के रूप में माँग के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
- कुछ मुख्य व्यक्तियों की सूची का संकलन कीजिए, जिन्हें आपके माता-पिता और अध्यापक याद करते हैं। तेलंगाना राज्य के गठन में उनके द्वारा दिये गये योगदान के संदर्भ में अपने कक्षाकक्ष के लिए एक पोस्टर या दीवार समाचार पत्र तैयार कीजिए।

भारत में हैदराबाद राज्य का विलय (The merger of Hyderabad state with India)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम चरण में हैदराबाद राज्य या निज़ाम अधिराज्य पर ध्यान केंद्रित हुआ। जब अंग्रेज़ों ने भारत छोड़ा तब निज़ाम अपने शासन के अधीन एक स्वतंत्र राज्य के गठन पर विचार कर रहा था। हैदराबाद के राष्ट्रवादी इसके विरुद्ध थे। हैदराबाद के 16 जिलों में से आठ जिलों में तेलुगु भाषी लोग रहते थे। इन भागों को ही तेलंगाणा कहा गया। हैदराबाद के राष्ट्रवादी, गाँवों में फैल गयें और उन्होंने तेलुगु भाषा के विकास, प्रजातांत्रिक सरकार और सामाजिक समानता के लिए प्रचार करना आरंभ किया। इस प्रचार के विकास के लिए 1920-30 में आंध्र महासभा का उदय हुआ। 1940 में तटीय आंध्र के राष्ट्रीयतावादियों ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया। शीघ्र ही आंदोलन ने भू-सुधारों से संबंधित मुद्दों को उठाया तथा निज़ाम तथा रज़ाकारों का समर्थन करने

मानचित्र 1 एकीकृत हैदराबाद राज्य के साथ तेलंगाणा

SCERT TELANGANA

वाले दोराओं (Doras) के शासन का विरोध किया। इस आंतरिक संघर्ष ने कारण, जवाहरलाल नेहरु के प्रधानमंत्रित्व में भारतीय सरकार ने पोलिस कार्यवाही आरंभ की और भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य के विलय को सुनिश्चित कर लिया। VIII कक्षा में आपने इसके बारे में पढ़ा होगा। उस समय तटीय आंध्र और रायलसीमा क्षेत्र मद्रास प्रेसीडेंसी के हिस्से थे। तेलुगु बोले जाने वाले सभी प्रदेशों को मिलाकर आंध्र प्रदेश राज्य के निर्माण के लिए शीघ्र ही एक आंदोलन आरंभ हुआ। पिछली कक्षाओं में भाषायी राज्यों के गठन के बारे में आप पढ़ चुके हैं।

जेंटलमैन समझौता और आंध्र प्रदेश राज्य का गठन (The Gentlemen's Agreement and the Formation of the State of Andhra Pradesh)

उस समय ऐसे तीन भिन्न राज्य थे जिनमें तेलुगु भाषा बोली जाती थी। इनमें तेलंगाना, तटीय आंध्र और रायलसीमा शामिल थे। भिन्न-भिन्न बोलियों के अतिरिक्त तीनों क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ और पहचान थी। तेलंगाना भाषा को एक समावेशित लोक परंपरा से लिया गया था जिनमें जनजातीय भाषाएँ, दक्कनी उर्दू, कन्नड़ और मराठी शामिल थी जबकि तटीय आंध्र की भाषा संस्कृतनिष्ठ थी। तेलंगाना की संस्कृति मिश्रित थी जो मुस्लिम, दलित, दस्तकार, जनजाति और प्रवासी समुदायों से ली गयी थी। तेलंगाना की सामाजिक रूपरेखा स्पष्ट थी। इसमें अन्य भागों की तुलना में, एक बड़े अनुपात में जनजाति लोग, पिछड़ी जाति के लोग और मुस्लिम लोग थे। ऐतिहासिक तौर पर, तेलंगाना की तुलना में तटीय क्षेत्रों में संस्कृत का गहरा प्रभाव था। वे भी अंग्रोज़ों के प्रत्यक्ष शासन के अधीन थे और उन्हें 19वीं शताब्दी से अंग्रेज़ी शिक्षा सुलभ थी। जिससे वे तीव्र आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुज़रे। इसके विपरीत निज़ामों के अधीन तेलंगाना में शिक्षा के माध्यम के रूप में उर्दू को थोपा गया। आधुनिक शिक्षा के विकास में यह प्रक्रिया धीमी थी। 1948 में तेलंगाणा की साक्षरता दर 9% थी विशेषतः महिला साक्षरता दर केवल 4% थी।

निम्नलिखित विषयों पर तेलंगाना की अनोखी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

i. प्राकृतिक विशेषताएँ

ii. समाज

iii. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जहाँ तटीय आंध्र मुख्यतः एक मैदानी क्षेत्र या जिनमें विकसित नहर सिंचाई व्यवस्था से पूर्ण डेल्टा सम्मिलित थे। वहीं तेलंगाना शुष्क पठारी क्षेत्र था जो वर्षा आधारित कृषि, पशुपालन, शिकार तथा वनों से एकत्रीकरण पर आधारित था। तालाबों के निर्माण के लिए लहरदार प्रकृत भू-भाग का उपयोग किया जाता था और इस जल का उपयोग विभिन्न फसलों के उगाने में किया जाता था। ब्रिटिश शासन के दौरान, कृषि, व्यापार और उद्योग के संदर्भ में तटीय आंध्र अधिक विकसित था। इसी समय तेलंगाना के पास इसमें से बहने वाली महत्वपूर्ण नदियों के विकास की महान् क्षमता थी और इसके पास बहुत समृद्ध खनिज़ संपदा तथा वन थे। इसी कारण तटीय आंध्र के धनी लोग तेलंगाना के संसाधनों के उपयोग के लिए, तेलंगाना में निवेश के लिए आतुर थे। परिणामस्वरूप आंध्र क्षेत्र से, विशालांध्रा की माँग हुई।

SCERT TELANGANA

भारत में विलय के पश्चात्, हैदराबाद राज्य 1952 में प्रजातांत्रिक राज्य बना तथा बरुगुला रामकृष्णा राव इसके प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में चुने गये। आंध्र राज्य 1953 में मद्रास प्रेसीडेंसी से अलग हुआ तथा टंगटूरी प्रकाशम इसके मुख्यमंत्री बने। तेलुगु भाषी क्षेत्रों को एक में विलय करने के लिए सक्रिय प्रचार आरंभ हुआ। जहाँ आंध्र विधानसभा ने विलय के समर्थन में सर्वसम्मति दी, वहीं, हैदराबाद राज्य विधान सभा के सदस्यों की भारी संख्या का विलय के बारे में गंभीर विचार थे। उन्हें चिंता थी कि अधिक धनी और विकसित तटीय आंध्र के अभिजात वर्ग भावी राज्य पर शासन करेंगे और तेलंगाना राज्य के लोग बिना किसी लाभ के अपने क्षेत्र के संसाधनों पर से नियंत्रण खो देंगे। वे लोग अपने क्षेत्र के युवाओं के शैक्षिक और रोज़गार के अवसरों के लिए भी चिंतित थे क्योंकि तटीय प्रदेशों में अधिकांश संख्या में अंग्रेज़ी शिक्षित युवा थे। संघीय सरकार की पहल से दोनों तरफ के नेताओं ने दिल्ली में भेंट की और 20 फरवरी 1956 को वे जिस निर्णय पर पहुँचे उसे ''जेंटलमैन समझौता'' (Gentlemen's Agreement) कहा जाता है। आंध्र के बैजवाडा गोपाल रेड्डी, नीलम संजीव रेड्डी, गौतू लच्चन्ना, अल्लूरि सत्यनारायण राजु तथा तेलंगाणा के बूर्गुला रामकृष्णा राव, मर्री चेन्ना रेड्डी, जे.वी.नरसिंगराव और के.वी.रंगारेड्डी ने समझौते पर हस्ताक्षर किये। मूलभूत रूप से 14 बिंदुओं पर उन्होंने समझौता किया। इससे तेलंगाना के लोगों की संतुष्टि के आधार पर दो राज्यों के विलय का मार्ग सुगम हुआ। परिणामस्वरूप, एक नये राज्य आंध्र प्रदेश का गठन हुआ, जिसकी राजधानी हैदराबाद थी। समझौते के मुख्य बिंदु थे -

1. **प्रशासन पर जो व्यय होगा वह समानुपात में दोनों राज्यों द्वारा वहन किया जायेगा तथा तेलंगाना क्षेत्र से होने वाले अतिरिक्त राजस्व को तेलंगाना के विकास के लिए खर्च किया जायेगा।**
2. **तेलंगाना की विद्यमान शैक्षिक सुविधाओं तेलंगाणा क्षेत्र के छात्रों के लिए ही आरक्षित रखा जायेगा।**
3. **मुल्की नियमों को वैसे ही अमल में लाया जायेगा जिसके अंतर्गत निर्णय लिया गया कि तेलंगाना में कम से कम 12 वर्ष तक निवास करने वाले लोग ही तेलंगाना में नौकरी पाने और तेलंगाना के शैक्षिक संगठनों में प्रवेश पाने के योग्य होंगे।**
4. **तेलंगाना के विकास और आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए एक क्षेत्रीय परिषद्, विधान सभा के 20 सदस्यों के मेल से बने संवैधानिक निकाय (Statutory body) को आरंभ करने का निर्णय लिया गया।**
5. **तेलंगाना की कृषिगत भूमि के विक्रय का नियंत्रण क्षेत्रीय परिषद् के पास होगा।**
6. **आंध्र प्रदेश मंत्रिमंडल में 40 प्रतिशत सदस्य तेलंगाना से और 60 प्रतिशत सदस्य आंध्र से होंगे।**
7. **यदि मुख्य मंत्री आंध्र के होंगे तो उपमुख्य मंत्री तेलंगाना के होंगे। यदि मुख्य मंत्री तेलंगाना के होंगे तो उपमुख्यमंत्री आंध्र के होंगे।**

तेलंगाना के लिए क्षेत्रीय परिषद की स्थापना का प्रस्ताव एक नया आविष्कार था।

जनता

SCERT TELANGANA

मानचित्र 2 भूतपूर्व आंध्रप्रदेश

अन्य क्षेत्रों के लिए विकास योजनाएँ राज्य सरकार को ही बनाना था। किंतु तेलंगाना के संदर्भ में, यह कार्य क्षेत्रीय परिषद् का ही था। क्षेत्रीय परिषद् को तेलंगाना के सर्वांगीण विकास की सुरक्षा करनी थी। एक सामान्य योजना के अंतर्गत इसे ही योजना और विकास, सिंचाई और औद्योगिक विकास से संबंधित सभी मुद्दों को देखना था। तेलंगाना क्षेत्र में सेवाओं में भर्ती का कार्य भी इसे ही देखना था। बाहरी क्षेत्रों से आने वाले लोगों को, तेलंगाना की भूमि को बाहरी लोगों को बेचने से संबंधित विषय पर नियंत्रण के कार्य की अपेक्षा भी क्षेत्रीय परिषद् से ही थी।

यह समझौता राज्य संस्थानों के समान व्यय की सुनिश्चितता पर बल देता था तथा तेलंगाना के युवाओं के शैक्षिक और रोज़गार अवसरों को सुनिश्चित करता था।

परिणामस्वरूप आंध्र प्रदेश के नये राज्य में इस समझौते ने तेलंगाना की एक अलग पहचान बनायी। आगे इसीलिए इसे ''राज्य में राज्य'' (State within the State) के नाम से जाना गया।

- कल्पना कीजिए कि आप तेलंगाना क्षेत्रीय परिषद के सदस्य हैं। आप किन विशिष्ट विकास गतिविधियों का सुझाव देंगे? आपके द्वारा प्रस्तावित अति महत्वपूर्ण तीन योजनाओं की सूची बनाइए।
- किन तरीकों से तेलंगाना के अनुसूचित जाति, जनजाति और बंजारें लोगों के रोज़गार के अवसरों को सुनिश्चित किया जा सकता है?
- तेलंगाना के खनिज संसाधनों के उपयोग के उत्तम तरीके क्या हो सकते हैं?
- तेलंगाना के किसानों और श्रमिकों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ अन्य क्षेत्रों के लोगों की चुनौतियों से भिन्न हैं। कक्षा में चर्चा कीजिए।
- विद्यार्थियों ने तेलंगाना के लिए पृथक राज्य की माँग के लिए महत्वपूर्ण भूमिका क्यों निभायी होगी? अपने विचार बताइए।

1969 आंदोलन

समय के गुज़रने के साथ तेलंगाना के क्षेत्रों में जेंटलमैन समझौते की गैर अमलवारी पर असंतोष उत्पन्न हुआ। इस असंतोष के तीन प्रमुख कारण थे : तेलंगाना से प्राप्त अतिरिक्त राजस्व को राज्य के अन्य क्षेत्रों को स्थानांतरित करने, सरकारी क्षेत्र में रोज़गार में भेदभाव, मुल्की नियमों का उल्लंघन करते हुए तेलंगाना क्षेत्र में कार्यरत तटीय आंध्र के लोगों को अधिवासी दर्जा (domicile status) प्रदान करना आदि। कुछ नियुक्तियों पर यह एक विरोध के रूप में आरंभ हुआ और शीघ्र ही एक जन आंदोलन बन गया जिसमें उस्मानिया विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने मुख्य भूमिका निभाई। अनेक प्रदर्शन हुए, हड़तालें और अनशन किये गये जिसमें मृत्यु तक अनशन भी शामिल था। हज़ारों

SCERT TELANGANA

की संख्या में व्यापक प्रदर्शन हुए। प्रदर्शनकारियों पर फायरिंग के रूप में पुलिस प्रतिरोध हुआ। आधिकारिक रिकार्ड् के अनुसार आंदोलन के दौरान तीन सौ सत्तर लोगों, जिनमें अधिकांश विद्यार्थी थे, को अपनी जानें गंवानी पड़ी।

इसी समय तेलंगाना के कई नेताओं ने मिलकर एक पृथकराज्य के गठत हेतु कार्य करने के लिए तेलंगाना प्रजा समिति के नाम से एक संघ (forum) की स्थापना की। आगे चलकर इसने एक नये राजनैतिक दल का रूप ले लिया। केंद्रीय सरकार ने लंबी बातचीत के बाद आठ बिंदुओं की योजना तैयार की जिसमें मूलभूत रूप से विभिन्न समितियों की स्थापना का लक्ष्य शामिल था। फिर भी यह अधिकांश लोगों को संतुष्ट नहीं कर सका और कुछ समय के लिए आंदोलन धीमा पड़ गया।

चित्र 21.1 तेलंगाना आंदोलन 1969 में विरोध के

तेलंगाना आंदोलन के विरोध में 1972 में सीमांध्र क्षेत्र में एक आंदोलन आरंभ हुआ जिसे ''जय आंध्र आंदोलन'' कहा जाता है। इस आंदोलन की माँग थी - तटीय जिलों में बड़े पैमाने पर विकास तथा अधिवासी दर्ज़ा (Domicile Status) से संबंधित मुल्की नियमों की समाप्ति। यहाँ भी, आंदोलन में छात्रों ने मुख्य भूमिका निभायी क्योंकि उन्हें अपने रोज़गार अवसरों के लिए खतरे की आशंका हुई। 1973 में केंद्र सरकार द्वारा छह बिंदुयी सूत्रों का गठन हुआ। इसके द्वारा सभी क्षेत्रों को सुनिश्चित किया गया कि सरकारी नौकरियाँ स्थानीय लोगों को दी जायेगी, शैक्षिक अवसरों का विस्तार सभी क्षेत्रों में किया जायेगा और हैदराबाद में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जायेगी। इसी समय मुल्की नियमों तथा तेलंगाना के लिए गठित क्षेत्रिय परिषद को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार तेलंगाना की अलग पहचान की शपथ जो ''जैंटलमैन समझौते'' में की गई थी वह समाप्त हो गई। आंध्र प्रदेश राज्य के सभी क्षेत्रों को एक ही माना जाने लगा।

सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व और केंद्र सरकार द्वारा बार-बार बाधा उत्पन्न करने के विरोध में इसी समय राजनैतिक गतिविधि की नयी लहर उत्पन्न हुई। इसीसे तेलुगु देशम पार्टी के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ और क्षेत्रीय आंदोलन कुछ समय के लिए मंद पड़ गया।

SCERT TELANGANA

तेलंगाना में बढ़ता असंतोष

जैंटेलमैन समझौते के बावजूद अनेक मुख्य बिंदुओं जैसे क्षेत्रीय परिषद् के संविधान की अमलवारी नहीं हुई थी। केवल क्षेत्रीय समिति का गठन किया गया था और इसकी सिफारिशों को अनिवार्य नहीं किया गया और अधिकतर इन्हें सरकार द्वारा नज़र अंदाज किया गया था।

सुनियोजित विकास के दौरान, 1956 से 1990 के बीच आंध्र प्रदेश राज्य में अनेक विकासशील गतिविधियों की शुरुआत हुई। विशाल बाँधों का निर्माण किया गया, सिंचाई और विद्युत परियोजनाओं की शुरुआत हुई, वृहत् खनन और औद्योगिक भवनों का आरंभ हुआ। कृषि उत्पादन में रूपांतरण के लिए कृषि में हरित क्रांति की शुरुआत हुई। अधिकांश संख्या में विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थाओं की स्थापना हुई। 1990 के बाद राज्य में, विशेषकर हैदराबाद में, सूचना और तकनीकी उद्योग में अप्रत्याशित विकास हुआ। तेलंगाना के लोगों ने विकास की विषमताओं को अनुभव किया क्योंकि सही लाभ राज्य के अन्य क्षेत्रों को हो रहा था। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि तेलंगाना क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग स्थानीय लोगों के लाभ के लिए नहीं हो रहा है। युवाओं ने यह भी अनुभव किया कि राज्य में उत्पन्न नौकरी के अवसरों का लाभ अन्य क्षेत्रों के लोगों को हो रहा है।

- आप ऐसा क्यों सोचते है कि कुल पैदावार क्षेत्र में वृद्धि कृषि की प्रगति का सूचक है?
- सिंचाई के लिए कुँओं पर अत्यधिक निर्भरता के कारण तेलंगाना के किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?
- अतीत में तालाब जैसी जन सिंचाई व्यवस्था को क्यों नज़रअंदाज़ किया गया होगा? इसके पुनःसंग्रहण के लिए क्या कदम उठाये जाने चाहिए?
- तेलंगाना में अत्यधिक संख्या में आत्महत्याओं के कारण क्या हैं?
- तटीय आंध्र की तुलना में तेलंगाना में साक्षरता दर की कमी के क्या कारण हैं?

कुल कृषि क्षेत्र - मिलियन हेक्टर में

क्षेत्र	1955-56	2006-07	वृद्धि %
आंध्र क्षेत्र	4.2	5.3	20
तेलंगाना क्षेत्र	4.8	5	5

वास्तविक सिंचित क्षेत्र - लाख हेक्टेर में

क्षेत्र	1955-56	2006-07	वृद्धि %
आंध्र क्षेत्र	17	23	135
तेलंगाना क्षेत्र	7	19	257

Source : Sri Krishna Committee Report

यदि हम कुल कृषि क्षेत्र के सूचकांक को देखेंगे तो कुल क्षेत्र जिसमें एक वर्ष में पैदावार होती है तो हम आंध्र क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि और तेलंगाना क्षेत्र में निश्चित गतिहीनता को देखेंगे।

तेलंगाना में सिंचाई की वृद्धि के लिए मुख्यतः किसानों को मूल्य चुकाना पड़ा क्योंकि इसके लिए उन्होंने खर्चीले कुँए खुदवाये जबकि आंध्र क्षेत्र में सिंचाई का विस्तार नहर सिंचाई से हुआ। यह सुविधा उन्हें सरकार द्वारा दी गयी।

वास्तविक सिंचित क्षेत्र - 2007 में लाख हेक्टेर में

क्षेत्र	कुँआ	नहर	तालाब	अन्य
आंध्र क्षेत्र	5	13	2.5	2.5
तेलंगाना क्षेत्र	14	2.5	2	0.5

सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के संदर्भ में हम देखते हैं कि तेलंगाना क्षेत्र मुख्य रूप से कुँओं पर निर्भर है और आंध्र क्षेत्र नहरों की सिंचाई पर निर्भर है।

SCERT TELANGANA

1993-94 में कृषि से होने वाली प्रति ग्रामीण व्यक्ति आय (लगभग 7,800 रु.) दोनों क्षेत्रों में समान थी। आंध्र क्षेत्र में 2007-08 में यह बढ़कर 11,800 रु. हो गयी, जबकि तेलंगाना क्षेत्र में ऐसी कोई वृद्धि नहीं देखी गयी और यह केवल 10,000 रु. तक ही पहुँच सकी।

ठीक इसी समय, तेलंगाना की जनसंख्या का कृषि श्रम 38% से बढ़कर 47% हो गया। किंतु आंध्र क्षेत्र में केवल 1% वृद्धि हुई। इससे तेलंगाना में महान कृषि संकट उत्पन्न हुआ जिससे तेलंगाना के किसानों ने अपनी भूमि को बेच दिया और किसानों ने मज़दूरों का रूप ले लिया। मई 2004 और नवंबर 2005 के बीच, सूखा, फसलों के नुकसान, लोगों के आजीविका से च्युत होने के कारण आंध्रप्रदेश में 1068 आत्महत्या के मामले दर्ज़ किये गये। इसमें तेलंगाना के आत्महत्या के मामले 663 थे। फलस्वरूप राज्य में संकट के कारण जो आत्महत्याएँ हुई उसमें तिरसठ प्रतिशत आत्महत्याएँ तेलंगाना क्षेत्र में हुईं।

यहाँ तक कि सर्वांगीण शैक्षिक उपलब्धि में भी तेलंगाना क्षेत्र तटीय आंध्र क्षेत्र से पीछे ही था। 2001 में तेलंगाना की साक्षरता दर 53% और आंध्र की साक्षरता दर 63% थी। इसी काल के दौरान तेलंगाना क्षेत्र के निर्धन और सामाजिक रूप से हीन वर्गों में साक्षरता दर और भी कम थी। तेलंगाना में कॉलेजों की संख्या 159 थी और यदि हैदराबाद को छोड़ा जाय तो तेलंगाना क्षेत्र में केवल 116 कॉलेज ही थे और आंध्र में कॉलेजों की संख्या 181 थी जबकि दोनों प्रदेशों में युवाओं की संख्या समान थी। ठीक इसी प्रकार कॉलेज शिक्षा के अनुदान की राशि तेलंगाना के लिए लगभग 93 करोड़ थी और आंध्र के लिए 224 करोड़ थी।

इसके साथ ही असमान विकास के कारण, तेलंगाना क्षेत्र के लोगों ने उनके साथ होने वाले सांस्कृतिक भेदभाव का भी अनुभव किया। विलय के पश्चात् तटीय आंध्र की भाषा और संस्कृति को एक आदर्श भाषा और संस्कृति के रूप में प्रोत्साहित किया गया और तेलंगाना की भाषा और संस्कृति को हीन (पिछड़ी) माना गया। तेलंगाना के इतिहास, संस्कृति और नेताओं को विद्यालयीन पाठ्यपुस्तकों में पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया। तेलंगाना के लोक देवताओं और त्यौहारों को नज़रअंदाज़ किया गया जबकि तटीय आंध्र के संस्कृतनिष्ठ सांस्कृतिक रिवाज़ों और त्यौहारों को प्रमुखता दी गयी। तेलंगाना के लोगों का चित्रांकन जिन फिल्मों में हुआ, उन फिल्मों को भी पिछड़ी और अपरिष्कृत माना गया।

इसी बीच राज्य के बाहरी और तटीय आंध्र के धनी लोगों ने तेलंगाना विशेषकर हैदराबाद शहर और इसके चारों ओर भूमि क्रय में बड़े पैमाने पर निवेश करना आरंभ किया। इससे प्रदेश में निवेश तो हुआ किंतु स्थानीय लोगों को इस विकास से कुछ लाभ नहीं हुआ और वास्तविकता में रियल इंस्टेट व्यापारियों के कारण अपनी ही भूमि पर से उनका नियंत्रण खत्म होने लगा।

ठीक इसी समय तेलंगाना के श्रमिक और गरीब किसान विभिन्न प्रकार के दबावों का सामना कर रहे थे। एक ओर, शुष्क भूमि वाले गरीब किसान घटते जल संसाधनों के कारण सीमित कृषि उत्पादों का सामना कर रहे थे। कारीगर अपने उत्पादों की माँग में कमी के साथ लकड़ी और बाँस जैसे कच्चे माल के स्त्रोतों में भी कमी का सामना कर रहे थे। जनता धोबी और बंजारे समुदायों जैसी अनेक पारंपरिक सेवा वर्गों ने भी अपनी आजीविका और सेवा की माँग

SCERT TELANGANA

में कमी का अनुभव किया। जबकि ऐसी समस्याओं का सामना सारे देश में गरीब लोग करते हैं। तेलंगाना के लोग यह समझ रहे थे कि उनकी इस स्थिति का कारण राज्य सरकार की धनी-समर्थक नीतियाँ हैं जो आंध्र के व्यापारियों की मदद के लिए बनाई गयी थी। वे एक ऐसी सरकार की कामना कर रहे थे जो उनकी माँगों को सुने और उनकी समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान दे।

1990 में आंदोलन

- तेलंगाना में मनाये जाने वाले प्रमुख त्यौहार कौन से हैं? माहवार सूची तैयार कीजिए।
- ऐसी फिल्मों की सूची बनाइए जो तेलंगाना की जनता, भाषा और संस्कृति का सही प्रतिनिधित्व करती है।
- पिछले बीस वर्षों के दौरान तेलंगाना एक विशाल और समृद्ध शहर बन गया है। तेलंगाना की जनता इससे संतुष्ट क्यों नहीं है?
- जिन समस्याओं का सामना तेलंगाना की जनता कर रही है वैसी ही समस्याओं का सामना अन्य राज्यों के लोग भी कर रहे हैं। आपके विचार में पृथक राज्य का गठन क्या उनकी समस्याओं का पर्याप्त समाधान है। क्यों?

आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के परिणामस्वरूप जहाँ किसानों, कारीगरों और अन्यों के विकट समस्याओं का सामना किया वहीं अधिकांश संख्या में ठेकदारों और निजी निवेशकों ने बड़ा लाभ उठाया। किसानों ने उर्वरकों, कीटनाशकों, बिजली तथा सस्ते विदेशी कृषि उत्पादों जैसे निर्गतों के मूल्यों में अधिकतम वृद्धि का सामना किया। तेलंगाना में भू-जल संसाधनों में कमी ने समस्या को और भी बढ़ाया क्योंकि किसानों को गहरे कुएँ खुदवाने के लिए बहुत अधिक निवेश करना पड़ा। जैसे कि ऊपर बताया गया है इसी कारण प्रदेश में अचानक किसानों ने आत्महत्याएँ की। तेलंगाना में बाहरी व्यक्तियों को कृषि भूमि का तेज़ी से विक्रय हुआ। ठीक इसी प्रकार कारीगरों, पारंपरिक सेवा प्रदाताओं के पास न तो कोई नौकरियाँ थीं और न ही उन्हें नयी नौकरियाँ पाने के आसार नज़र आ रहे थे।

यह वही समय था जब सरकार अपने खर्च में कमी और भर्तियों को समाप्त करने का प्रयास कर रही थी। निजी क्षेत्र के अधिक विस्तृत होने पर भी, बेरोज़गारी या असुरक्षित रोज़गार एक बड़ी समस्या था। धीरे-धीरे इनमें से, जनसंख्या के प्रत्येक खण्डों ने अपनी मांगों के लिए अपने अलग संगठनों का विकास किया और आंदोलन चलाये। अपने जीवन के पारंपरिक रूप पर प्रवल खतरे का अनुभव करते हुए जनजाति जाति संगठन जैसे- *तुडुमदेब्बा, लम्बाड़ी नागरभेरी* और *येरुकला कुर्रु* और अन्यों ने जल, जंगल और जमीन जैसी अपनी वर्तमान जरूरतों की सुरक्षा के लिए सामने आना शुरु किया। *मदिगा डंडोरा, कुरमागोल्ला डोलुदेब्बा* और *मुकुदेब्बा* का गठन हुआ। ताड़ी निकालना, भेड़ पालन, बुनाई, मत्स्य पालन जैसे वर्ग व्यवसाय कारीगारों के लिए असंबद्ध होने लगे जिससे वर्ग व्यवसायों को खतरा उत्पन्न होने लगा। इसी कारण तेलंगाना आंदोलन से संबंधित बहुत छोटे समुदाय भी अपनी समस्याओं के समाधान की अपेक्षा कर रहे थे।

SCERT TELANGANA

तेलंगाना की जनता पर होने वाले अन्यायों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 1989 में बुद्धिजीवि वर्ग (Intelligentsia) ने तेलंगाना इंफार्मेशन ट्रस्ट (Telangana Information Trust) की स्थापना की। 1 नवंबर 1996 में प्रो.जयशंकर की अध्यक्षता बुद्धिजीवि वर्ग ने वरंगल में तेलंगाना विद्रोहम् नामक सभा का आयोजन किया। इसकी प्रेरणा से तेलंगाना राज्य के गठन की माँग के लिए अनेक संस्थाओं का गठन हुआ। तेलंगाना जन सभा (1997) और तेलंगाना महासभा (1997) ने पिछड़े वर्गों के आंदोलनों को राज्य आंदोलनों में विलय करने में मदद की।

तेलंगाना के कर्मचारियों ने अपने संगठन बनाये जिनमें अध्यापक, गैर-गजेटेड और गजेटेड अधिकारी शामिल थे। तेलंगाना के बौद्धिक वर्ग ने एकजुट होकर विभिन्न कोणों से मामलों की संकल्पनाओं को समझने के लिए 1977 ई. में उस्मानिया विश्वविद्यालय में एक सेमिनार का आयोजन किया। कर्मचारियों, विद्यार्थियों, लेखकों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने सेमिनारों, व्यवसायों, सभाओं और अन्य धूम-धामों का आयोजन आरंभ किया। इन आवेगों ने नये कार्यकर्ताओं को उत्पन्न किया और अनिवार्य रूप से तेलंगाना की हर सभा में उनके प्रदर्शन होने लगे। जगत्याल जैत्रायात्रा 1978 और वरंगल रैतुकुली संघम 1990 के बीच नवीन सक्रियतावाद ने युवाओं को नयी दिशा दिखाई और युवाओं से यह संदेश ग्रामीण जनता तक पहुँचा। कार्यकर्ताओं की नयी पीढ़ी को तैयार करने के लिए तेलंगाना का यह काल बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस नयी प्रेरणा से अनेक संगठनों का गठन हुआ।

तेलंगाणा राष्ट्र समिति (The Telangana Rashtra Samithi)

अनेक संगठनीय प्रयोग जैसे : तेलंगाना जन परिषद्, तेलंगाना महासभा, तेलंगाना जन सभा तथा तेलंगाना *ऐक्य वेदिका* ने राजनैतिक जोश और सक्रियतावाद की भावना का प्रयत्न किया किंतु इनसे किसी राजनैतिक दल की उत्पत्ति नहीं हुई। इसी संदर्भ में अप्रैल 2001 में तेलंगाना राष्ट्र समिति का गठन हुआ। इसी बीच तेलंगाना आंदोलन 'धूम-धाम' (सार्वजनिक गीत और नृत्य कार्यक्रम), 'गर्जना' (माँगों की घोषणा के लिए वृहद् जन सभाएँ) और पदयात्राएँ (यात्राएँ) जैसे विभिन्न विद्रोहों के रूपों द्वारा अभिव्यक्त हुआ। तेलंगाना की प्रसिद्ध माँगों की अभिव्यक्ति के लिए पारंपरिक बोनालु (देवताओं को चढ़ावा), रंगोली बनाना जैसे कार्यक्रम भी किये गये। तेलंगाना के सेवा वर्गों ने सड़कों पर अपने ग्राहकों के कपड़े धोकर, हजामत बनाकर तथा सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक भोजन (वंटावरुपु) बनाकर तेलंगाना आंदोलन में भाग लिया।

यह वृहद् आंदोलन गाँवों में दिसंबर 2009 और अप्रैल 2010 के बीच निरंतर चलता रहा। छात्रों ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। ऐसी स्थिति में छात्रों ने संयुक्त कार्यवाही समिति (Joint action committee) (JAC) की स्थापना की। JACs का आवेश आगे चलकर सभी संगठनों तक फैल गया और तेलंगाना में सैकड़ों JACs उत्पन्न हो गये। नवंबर 2009 से एक दुखद युग का आरंभ हुआ। क्योंकि इसमें सैकड़ों युवाओं ने अपने परिवारों और तेलंगाना को छोड़कर आत्महत्याएँ की थी।

सबद्ध वर्ण (सभी वर्गों) जैसे :- चाकली (कपड़े धोने वाले), नाई ब्राह्मण (नाई) ताड़ी निकालने वाले, काटीकापारलु (मृतों को दफनाने वाले) वंशराजुलु, लंबाडे, येरुकला और

SCERT TELANGANA

चित्र 21.2

चित्र 21.3

चित्र 21.4

चित्र 22.2, 22.3 और 22.4: भारी संख्या में लोगों ने विभिन्न तरीकों से भाग लिया। इस अध्याय में वर्ष 2000 के बाद की इन घटनाओं को दर्शाने वाले अनेक चित्र हैं। सकल जनल सम्मे का चित्र अध्यापकों, किसानों और स्त्रियों की भागीदारी को बताता है जिसमें वे अपनी माँग रख रहे हैं।

- विभिन्न व्यवसायों के लोगों ने किस प्रकार आंदोलन में भाग लिया? उदाहरण दीजिए।
- हम सभी को आगे आकर पृथक राज्य के लिए होने वाले आंदोलन में भाग लेना आवश्यक था। क्यों? अपने विचार बताइए।

मादिगा लोगों ने अपने स्वयं की संयुक्त कार्यान्वयन समिति JACs का निर्माण किया तथा विरोध आंदोलन में भाग लिया। कई मंडल मुख्यालयों में श्रृंखलाबद्ध अनशन का आयोजन किया गया जिसमें हर दिन एक विशेष वर्ग समूह के लोग इकट्ठे होकर अपने पारंपरिक उपकरणों द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर अपनी कारीगरी का प्रदर्शन करते थे। ये विरोध पारंपरिक व्यवसायों और जातियों तक ही सीमित नहीं थे। आधुनिक व्यवसायों जैसेः- अध्यापकों, औद्योगिक श्रमिकों, खदान मज़दूरों, व्यापार संघों तथा नारी संगठनों ने भी ऐसे ही विरोध किये।

के.चंद्रशेखर राव का अनशन - 2009

इन संवेगों को निर्णयात्मक रूप देते हुए तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता के.चंद्रशेखर राव ने सिद्दीपेट में 29 नवंबर 2009 से अनिश्चितकालीन अनशन की घोषणा की। अनशन के आरंभ होने के पूर्व ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उन्होंने खम्मम जेल में अनशन आरंभ किया और उसके बाद अस्पताल में अपने अनशन को जारी रखा। उनके प्रति निष्ठा दर्शाने के लिए उस्मानिया विश्वविद्यालय के छात्रों ने 16 नवंबर को तेलंगाना छात्र संयुक्त कार्यवाही समिति (TJAC) की स्थापना की। संयुक्त कार्यवाही समिति (JAC) की स्थापना की लहर काकतीय विश्वविद्यालय और बाद में तेलंगाना, के पालमुर, सातवाहन और महात्मागाँधी विश्वविद्यालयों तक पहुँच गयी। तब कर्मचारी जे.ए.सी., अधिवक्ता जे.ए.सी., जाति और समुदायों की जे.ए.सी. और जिलास्तरीय जे.ए.सी. का उद्भव हुआ।

तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता, के.चंद्रशेखर राव का अनशन एक तीव्र जन आंदोलन बन गया। 29 नवंबर 2009 से 9 दिसंबर 2009 के बीच लगभग दस दिनों तक वे अनशन पर थे।

SCERT TELANGANA

इसने लोगों को और प्रेरित किया तथा आंदोलन ने एक नया मोड़ ले लिया।

तेलंगाना प्राप्ति की प्रक्रिया में:

इस समय की सबसे बड़ी घटना छात्र जे.ए.सी. द्वारा की गयी असेम्बली मुट्टडी (विधानसभा पर आक्रमण) की घोषणा थी। यदि पृथक राज्य की घोषणा नहीं होगी तो छात्र जे.ए.सी. ने 10 दिसंबर 2009 को विधानसभा पर आक्रमण की घोषणा की। असंबली मुट्टडी में भाग लेने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालय के छात्र हैदराबाद शहर आये और विधानसभा के आस-पास अपने मित्रों और संबंधियों के घरों में छिप गये।

समुदायों के साधारण जनों तक आंदोलन का प्रसार, के.चंद्रशेखर राव का अनशन और प्रस्तावित असेंबली मुट्टडी जैसी उपर्युक्त परिस्थितियों ने आखिरकार केंद्र सरकार को तेलंगाना के गठन की घोषणा के लिए राज़ी किया। सीमांध्र के विभिन्न एम.एल.ए. और एम.पी. के तीव्र विरोध के बावजूद

- तेलंगाना राज्य के गठन से खान और कारखाना श्रमिक किस तरह लाभान्वित हो सकते हैं?
- वे नीतियों कौनसी हैं जिन पर चलकर कारीगर और हस्तकार एक प्रतिष्ठित आजीविका प्राप्त कर सकते हैं?
- नये राज्य में विभिन्न प्रकार के जनजातीय लोगों की ज़रुरतों को पूर्ण करने के लिए कौनसे कदम उठाये जाने चाहिए?

तेलंगाना आंदोलन में विरोध के रूप

तेलंगाना आंदोलन ने धूम-धाम, गर्जना, सड़क बंद, असेंबली मुट्टडी, पदयात्रा, बोनालु, मिलियन मार्च, सकल जनुल सम्मे तथा सागरहारम जैसे विभिन्न विरोध के माध्यमों और जन चेतनाओं के रूपों का नव-निर्माण किया।

'धूम-धाम'- गीतों और नृत्यों द्वारा विरोध का एक रूप था। विभिन्न लोक-रीतियों के अनेक कलाकार - गायक और नृत्यकार एक ही मंच या आत्म प्लेटफार्म पर आते हैं और अपने कौशलों का प्रदर्शन करते हैं। ओग्गुकथा, चिरुथालु, कोलाटम, बतुकम्मा, गोल्लासुडुलु - एकनाथम और अन्य स्थानीय गीत इस धूमधाम में आम है। उन्होंने तेलंगाना के गीतों पर अनेक नृत्यों का प्रदर्शन किया। उन्होंने तेलंगाना की संस्कृति को प्रक्षेपित किया तथा तेलंगाना आंदोलन को सुदृढ़ करने के लिए साधारण जानता को शिक्षित किया।

वंटावारुपु (लोग सार्वजनिक सड़कों पर आकर भोजन तैयार करते हैं और सड़कों पर ही खाते हैं।) इसमें जाति या धर्म पर भेदभाव नहीं किया जाता है। यह एक सहपनक्ती भोजनालु (मिलकर भोजन करना) कार्यक्रम है। वे सड़कों पर चलनेवाले बसों और अन्य वाहनों को रोक देते हैं। वंटावरुपु में विद्रोहियों द्वारा बनाया गया भोजन यात्रियों को खिलाया जाता है।

चित्र 21.5, 21.6 & 21.7 विरोध आंदोलन ने तेलंगाना जनता की अनोखी सांस्कृतिक पहचान और त्यौहारों पर बल दिया। विरोध के दौरान प्रदेश के गानों और नृत्यों का प्रदर्शन हुआ।

SCERT TELANGANA

तेलंगाना का गठन हुआ। 9 दिसंबर 2009 के दिन संघीय गृह मंत्री ने घोषणा की कि - ''पृथक तेलंगाना राज्य के गठन की प्रक्रिया की शुरुआत होगी।'' चंद्रशेखर राव से अपना अनशन समाप्त कर दिया।

घोषणा की वापसी

आंध्र के राजनैतिक नेताओं के दबाव के फलस्वरूप 23 दिसंबर 2009 को घोषणा वापस ले ली गयी। तत्पश्चात् आंध्र प्रदेश के विकास की जानकारी प्राप्त कर उसकी रिर्पोट केंद्र को सौंपने के लिए न्यायमूर्ति श्री कृष्णा की अध्यक्षता में एक कमीशन का गठन किया गया। तेलंगाना की जनता को सदमा पहुँचा। चलिए हम घोषणा की वापसी के संभावित कारणों को देखेंगे।

हैदराबाद विकास का केन्द्र बन गया था। आर्थिक सुधारों की सफलता के साथ वैश्विक महत्व पर इसके दावे, दोनों के कारण यह शहर भारत की एक आवश्यकता बन गया था। सारे संसाधनों को यहाँ उपलब्ध करवाया गया जिसके कारण असंतुलित क्षेत्रीय विकास हुआ। विभिन्न भागों के अनेक लोगों ने हैदराबाद की संपत्तियों में निवेश किया। इनमें से अधिकांश लोगों ने रोज़गार और शिक्षा की खोज में हैदराबाद की ओर प्रवासन किया।

अन्य क्षेत्रों के निवेशक अपने भविष्य के लिए चिंतित थे। तटीय क्षेत्रों के किसान भी सिंचाई के लिए नहरों से जल की प्राप्ति और नियमित विद्युत आपूर्ति के लिए चिंतित थे। इनमें से

चित्र 21.8 चित्र 21.9

चित्र 21.8, 21.9: वंटावरुपु, गलियों में मिलकर भोजन बनाते हुए और मिलकर खाते हुए। ये चित्र नये राज्य के गठन की माँग के लिए लोगों की एकता को दर्शा रहे हैं।

सीमांध्र लोगों को लगा कि तेलुगु भाषा के द्वारा एकता में बंधे राज्य का, दो राज्यों में पृथक होना, दुर्भाग्यपूर्ण है। इन विरोधों ने, केंद्र सरकार पर तेलंगाना के लिए नये राज्य की घोषणा को वापस लेने के लिए दबाव डाला।

इसी बीच अधिकांश स्वायत्त और गैर-दलीय संगठनों ने, स्वतंत्र राज्य की माँग के लिए विविध जन सामान्य को प्रेरित करने के लिए अपनी गतिविधियाँ ज़ारी रखी। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि नया राज्य तेलंगाना के सभी लोगों की रुचियों का प्रतिनिधित्व करेगा। इन सभी

SCERT TELANGANA

चित्र 21.10 : घेरे को तोड़ते हुए आंदोलनकारी

चित्र 21.11 : मिलियन मार्च में हिस्सा लेते हुए आंदोलनकारी

ने समाज के विभिन्न वर्गों को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन संगठनों ने आकारहीन सामाजिक संगठनों को राजनैतिक आकार प्रदान किया तथा राजनैतिक आंदोलन और जन आंदोलन को शक्तिशाली बनाया। इन संगठनों ने तेलंगाना के लिए एक पूर्णकालिक संवर्ग (cadre) को प्रशिक्षित किया। इन कार्यकर्ताओं ने विभिन्न स्तरों पर आंदोलन का समन्वयन किया जिससे बड़ी संख्या में जनता और नेतृत्व को जोड़ने के लिए नये संगठनीय रूप उभरे।

सभी लोगों को एक करने के लिए सभी दलों और संगठनों में मिलकर तेलंगाना संयुक्त कार्यवाही समिति (TJAC) का गठन किया। इसके नेतृत्व में छह प्रमुख आंदोलनों जैसेः- असहयोग आंदोलन, मिलियन मार्च, सकल जनुल सम्मे, 42 दिनों की सामान्य हड़ताल, सागर हारम (हैदराबाद में हुसैनसागर के चारों ओर मानव श्रृंखला), संसद यात्रा (संसद तक यात्रा) और चलो असेंबली की शुरुआत की गयी।

तेलंगाना की प्राप्ति

केंद्र सरकार ने इस पृष्ठभूमि में दोनों क्षेत्रों के कांग्रेस नेताओं से परामर्श के प्रयास को ज़ारी रखा। राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय लेने में दबाव उत्पन्न हो रहा था। तेलंगाना एक राष्ट्रीय मुद्दा बन

- सभी स्तरों पर अधिकांश संख्या में JAC's और अन्य संगठनों का गठन हुआ। एक शिखरीय तेलंगाना संयुक्त कार्यवाही समिति का गठन क्यों आवश्यक था? अपने विचार बताइए। इसके गठन ने आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया।
- कल्पना कीजिए कि आप तेलंगाना आंदोलन के कार्यकर्ता हैं। उस समय की अपनी भावनाओं का वर्णन करें जब केंद्र सरकार अलग राज्य करने की सहमती दी ।

चित्र 21.12 : हैदराबाद में टैंकबंड रोड पर एक रैली जिसे सागर हारम कहा गया।

SCERT TELANGANA

गया था। कांग्रेस कोर समिति ने आंध्र और तेलंगाना, दोनों के प्रतिनिधित्व को सुना तथा अंत में विभाजन के पक्ष में निर्णय लिया। इसके अनुसार 18 फरवरी को लोक सभा में, 20 फरवरी को राज्य सभा में बिल पास हुआ और 1 मार्च 2014 को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हुए। संसद ने 2 जून 2014 को नियुक्ति दिवस के रूप में आंध्र प्रदेश राज्यका विभाजन किया। संसद में बी.जे.पी, बी.एस.पी., सी.पी.आई. और अन्य विपक्षी दलों ने बिल का समर्थन किया। लोगों ने उत्सव मनाया। प्रजातंत्र प्रक्रिया में निर्णय लेने में देर हो सकती है किंतु विरोधों के रूप में जन-संघर्ष के दुराग्रह ने देश को विश्वास दिलाया कि आंध्र प्रदेश से तेलंगाना को अलग करना चाहिए और लोगों ने विभिन्न स्थानों पर तेलंगाणा विजयोत्सवमुलु आरंभ किया। छात्र और अन्य कार्यकर्त्ता खुश हुए कि उनका सपना

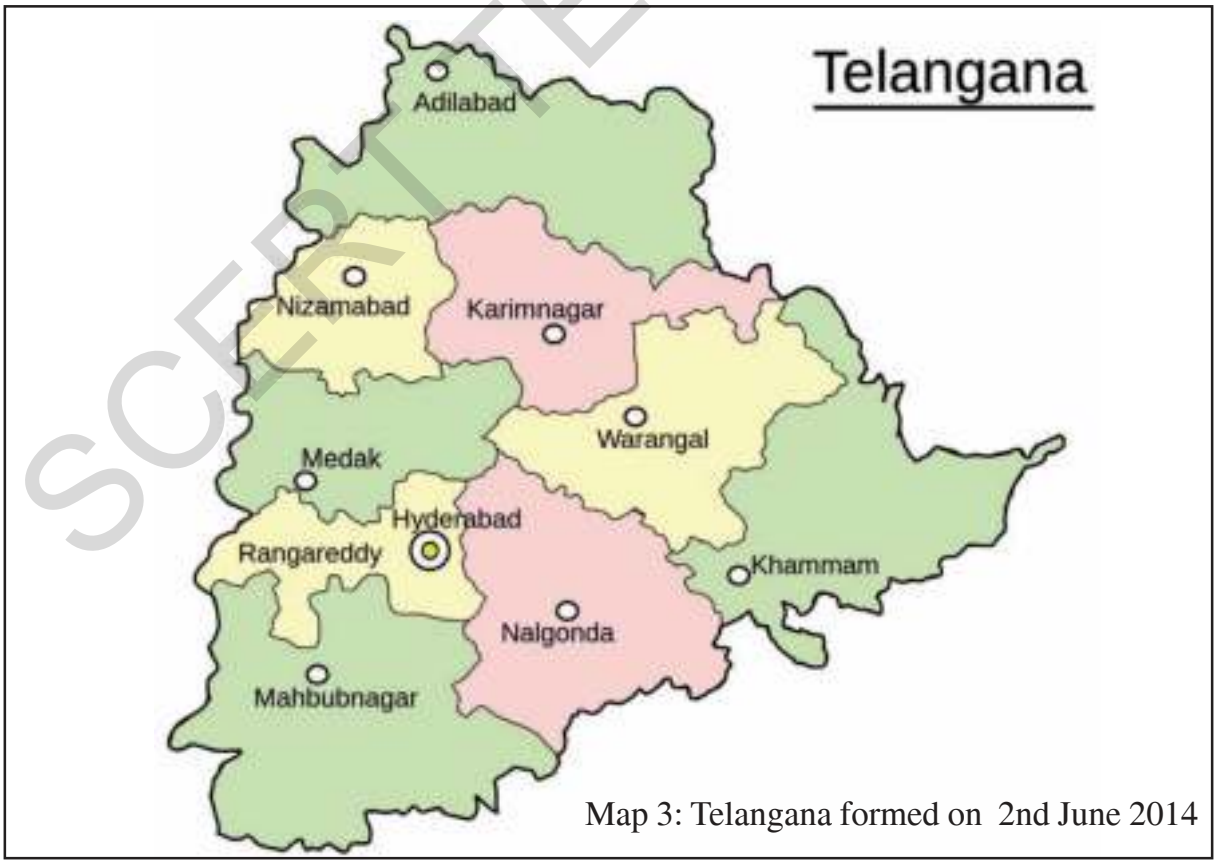

Map 3: Telangana formed on 2nd June 2014

SCERT TELANGANA

अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति कीजिए जब केंद्र सरकार ने पृथक राज्य के निर्माण की स्वीकृति दी थी।

- कल्पना कीजिए कि आप रायलसीमा के कर्मचारी है जो हैदराबाद में काम करते हैं। अपनी भावनाओं का वर्णन कीजिए।
- कल्पना कीजिए कि आप एक श्रमिक महिला है। अपने विचारों का वर्णन कीजिए।
- कल्पना कीजिए कि दिसंबर 2009 के समय आप आदिलाबाद जिले के जनजाति के सदस्य हैं। अपने मनोभावों का वर्णन कीजिए।

प्रोफेसर जयशंकर
(तेलंगाणा के विचारक):

कोत्तपल्ली जयशंकर ने अपने छात्र जीवन से ही (1952) पृथक तेलंगाणा के लिए संघर्ष आरंभ किया। इनका जन्म 6 अगस्त 1934 में अक्कमपेट गाँव के आत्मकूर मंडल के वरंगल रूरल जिले में हुआ था। उनकी माता का नाम महालक्ष्मी और पिता का नाम लक्ष्मीकांत राव है।

उन्होंने अपनी विद्यालयीन शिक्षा सरकाजी हाइस्कूल हनमकोंडा से तथा इंटरमीडियट व स्नातक की शिक्षा वरंगल से पूरी की है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने अर्थशास्त्र में एम.ए. की पढ़ाई की। उस्मानिया विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

इन्होंने अपना व्यावसायिक जीवन एक अध्यापक के रूप में आरंभ किया। तत्पश्चात वंरगल के चंदा कांतय्या मेमोरियल कॉलेज (सी.के.एम.कॉलेज) में प्रधानाध्यापक के रूप में, काकतीय विश्वविद्यालय और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेज (वर्तमान में EFLU) के रजिस्ट्रार के रूप में तथा काकतीय विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में कार्य किया।

पृथक तेलंगाणा के कट्टर समर्थक होने के कारण प्रोफेसर जयशंकर ने कई आंदोलनों में भाग लिया। 1952 में फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग राज्यों और पुनर्गठन के संबंध में जनमत लेने के लिए हैदराबाद पहुँचा। कमीशन को रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले छात्र संगठनों में प्रो. जयशंकर प्रमुख थे।

SCERT TELANGANA

प्रस्तुत की गयी रिपोर्ट के अध्ययन के पश्चात आयोग ने प्रश्न किया ''क्या तेलंगाणा एक पृथक राज्य के रूप में जीवित रह सकता है?'' इस प्रश्न के लिए उन्होंने एक छात्र नेता के रूप में निडरता से उत्तर दिया ''आँध्र के लोगों के साथ रहने की अपेक्षा हम जीवित रहने के लिए भीख माँग लेंगे। 1969 के तेलंगाणा आंदोलन को सुदृढ़ करने का इनका प्रयास प्रशंसनीय है। उन्होंने इस विचारधारा का प्रचार किया कि आँध्र लोगों के आधिपत्य के कारण तेलंगाणा के लोग शैक्षिक, रोजगार और सांस्कृतिक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी भेदभाव का सामना करते हैं।

1996 में आरंभ होने वाले तेलंगाणा आंदोलन के अगले चरण के ये विचारक थे। इन्होंने जन माध्यमों के द्वारा सांख्यिकी (Statistics) के साथ तेलंगाणा लोगों के द्वारा सामना की जाने वाली विषमताओं पर प्रकाश डाला।

इनकी इच्छा थी कि तेलंगाणा आंदोलन तीन चरणओं में चलाया जाय। इसमें से पहली चरण तेलंगाणा के सिद्धांतों का प्रचार, दूसरा विभिन्न रूपों में गतिविधियाँ व यूरोप तथा अंतिम चरण राजनैतिक प्रक्रिया का था। तेलंगाणा की प्राप्ति तक विचारधाराओं के प्रसार के लिए किये गये उनके प्रयास अद्भुत थे। उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर छात्र संगठनों, मंडलियों, राजनैतिक दलों और संयुक्त कार्यवाही समिति (JAC) ने तीव्र विरोध किया, जिससे तेलंगाणा आंदोलन को गति मिली। फल स्वरूप 2 जून 2014 के दिन तेलंगाणा राज्य का गठन हुआ। इन्होंने प्रामाणिक रूप से घोषणा कि ''मैंने तेलंगाणा का गठन देखा है।'' दुर्भाग्यवश पृथक तेलंगाणा गठन के सपने के साकार होने के पूर्व ही 21 जून 2011 के दिन बीमारी के कारण इनकी मृत्यु हो गयी।

प्रो. जयशंकर की स्मृति में तेलंगाणा राज्य की सरकार ने तेलंगाणा के कृषि विश्वविद्यालय का नाम बदलकर प्रोफेसर जयशंकर कृषि विश्वविद्यालय रख दिया और तेलंगाणा के नवगठित जिलों में से एक जिले का नाम जयशंकर रखा।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

रज़ाकार	क्षेत्रीय परिषद	पुलिस कार्रवाई
मुल्की नियम	सीमान्ध्रा	सकल फसल क्षेत्र

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1) गलत कथनों को सही कीजिए।
   - भारतीय राज्य भाषाओं के आधार पर बने हैं।
   - आंध्र प्रदेश राज्य में निवास करने वाले सभी विभिन्न समूहों के लोगों की भाषा को पर्याप्त पहचान उपलब्ध करवायी गयी है।
2) ''तेलंगाना में निवास करने वाली जनता की विविधता का एक ऐतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रकरण है।'' अध्याय में दिये गये तर्कों के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए।
3) जैंटलमैन समझौते की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए। क्षेत्रों के बीच यह अविश्वास का कारण कैसे बना?
4) तेलंगाना के लोगों की आकांक्षाओं के आधार पर बताइए कि तेलंगाणा राज्य में रहने वाले सभी वर्गों के लोगों की प्रतिष्ठा की सुनिश्चिता के लिए आप कौन से कदम उठायेंगे?
5) दोनों प्रदेशों में जल, कृषि, शिक्षा और रोज़गार की सुलभता में क्या अंतर थे?
6) शहरी, ग्रामीण प्रांतों के विकास में असमानताओं के कारण सरकार से जो अपेक्षाएँ है उनमें अन्तर्विरोध कैसे उत्पन्न हुआ है?
7) उन लोगों के द्वारा दिये गये तर्क क्या थे ये जो दोनों प्रदेशों को एकीकृत रखना चाहते थे?
8) तेलंगाना राज्य गठन के लिए प्रयोग में लाये गये विभिन्न जन चेतना माध्यमों का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे?
9) तेलंगाना राज्य के गठन में जे.ए.सी. और राजनैतिक दलों द्वारा निभायी गयी विभिन्न भूमिकाओं का वर्णन कीजिए? जे.ए.सी. ने राजनैतिक आदर्शों के लिए किस प्रकार एक मंच तैयार किया था? अपने विचार बताइए।
10) तेलंगाना के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइए।

    1) महबूबनगर 2) खम्मम 3) निज़ामाबाद 4) आदिलाबाद 5) नलगोंडा
    6) महबूबाबाद 7) निर्मल 8) जोगुलंबा

परियोजना कार्य

2009 के दौरान आंदोलन में भाग लेने वाले लोगों का साक्षात्कार लीजिए। उनके अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और एक रिर्पोट तैयार कीजिए। इन घटनाओं से संबंधित छायाचित्र (photos) पुराने समाचार पत्रों और मैगनीज़ों से इकट्ठे कीजिए और एक स्क्रैप बुक तैयार कीजिए। **जनता**

SCERT TELANGANA

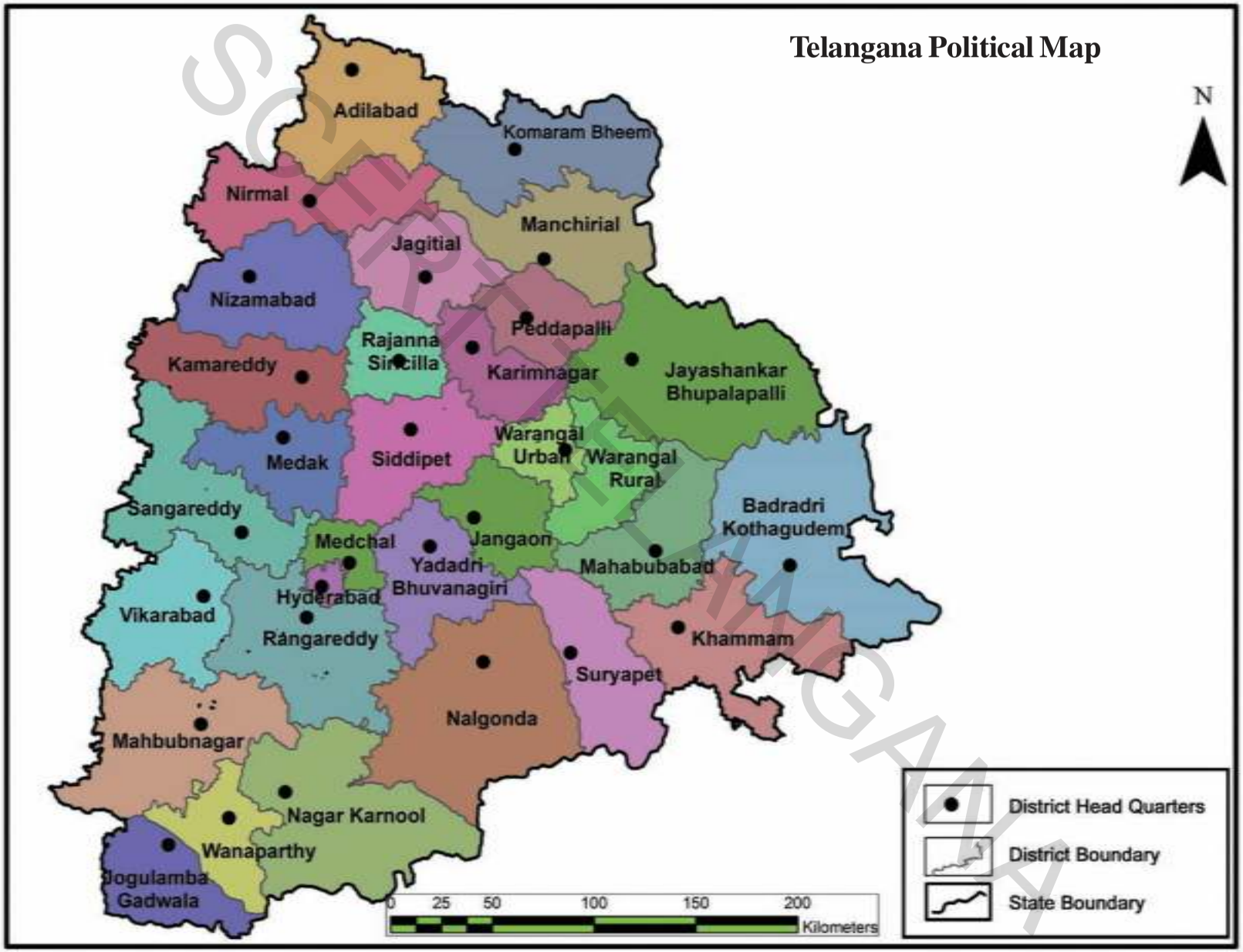

SCERT TELANGANA

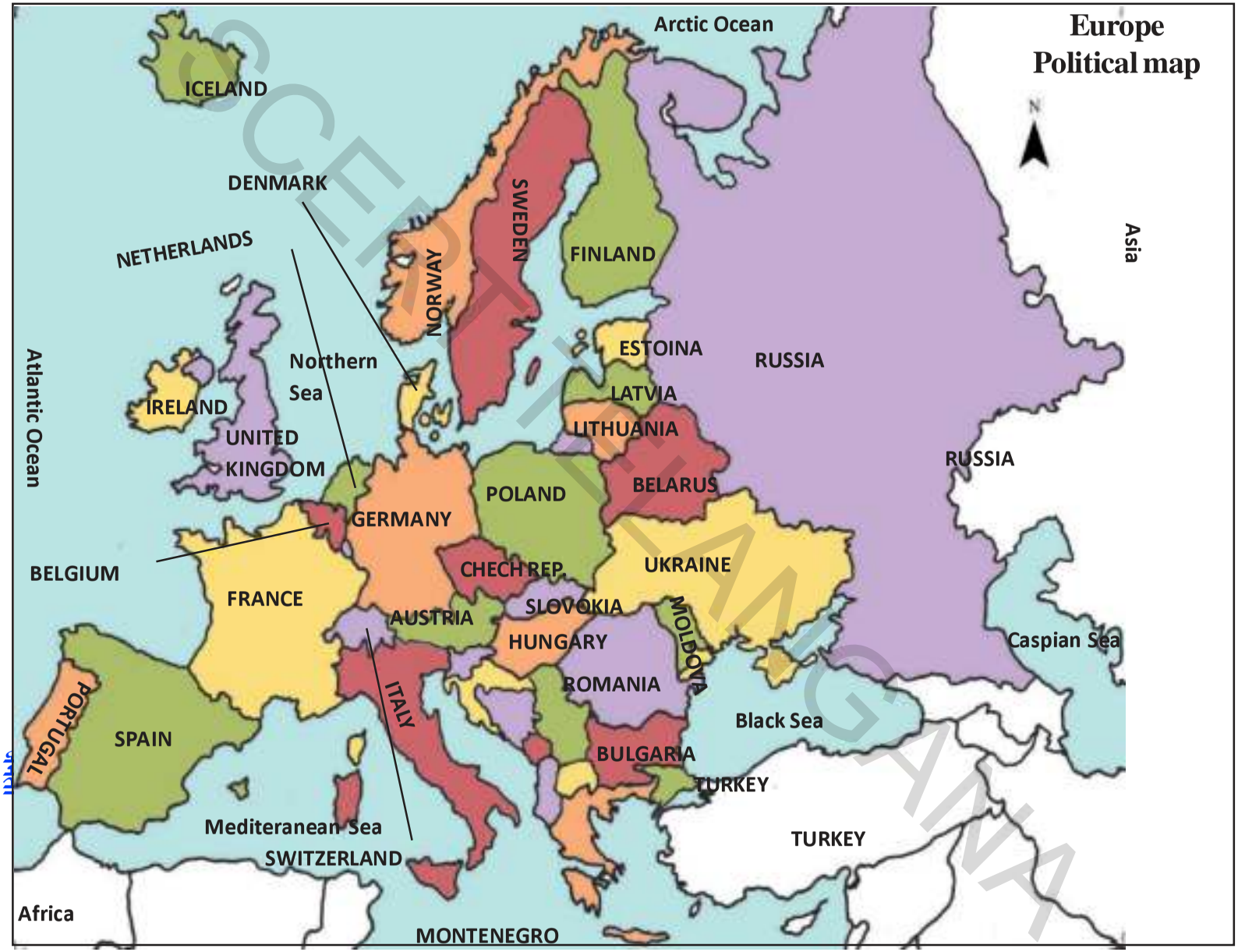

© SCERT TELANGANA

SCERT TELANGANA

Africa Political Map

SCERT TELANGANA

जनता

Africa Practice Map

SCERT TELANGANA

World Political Map

SCERT TELANGANA

World Outline Map

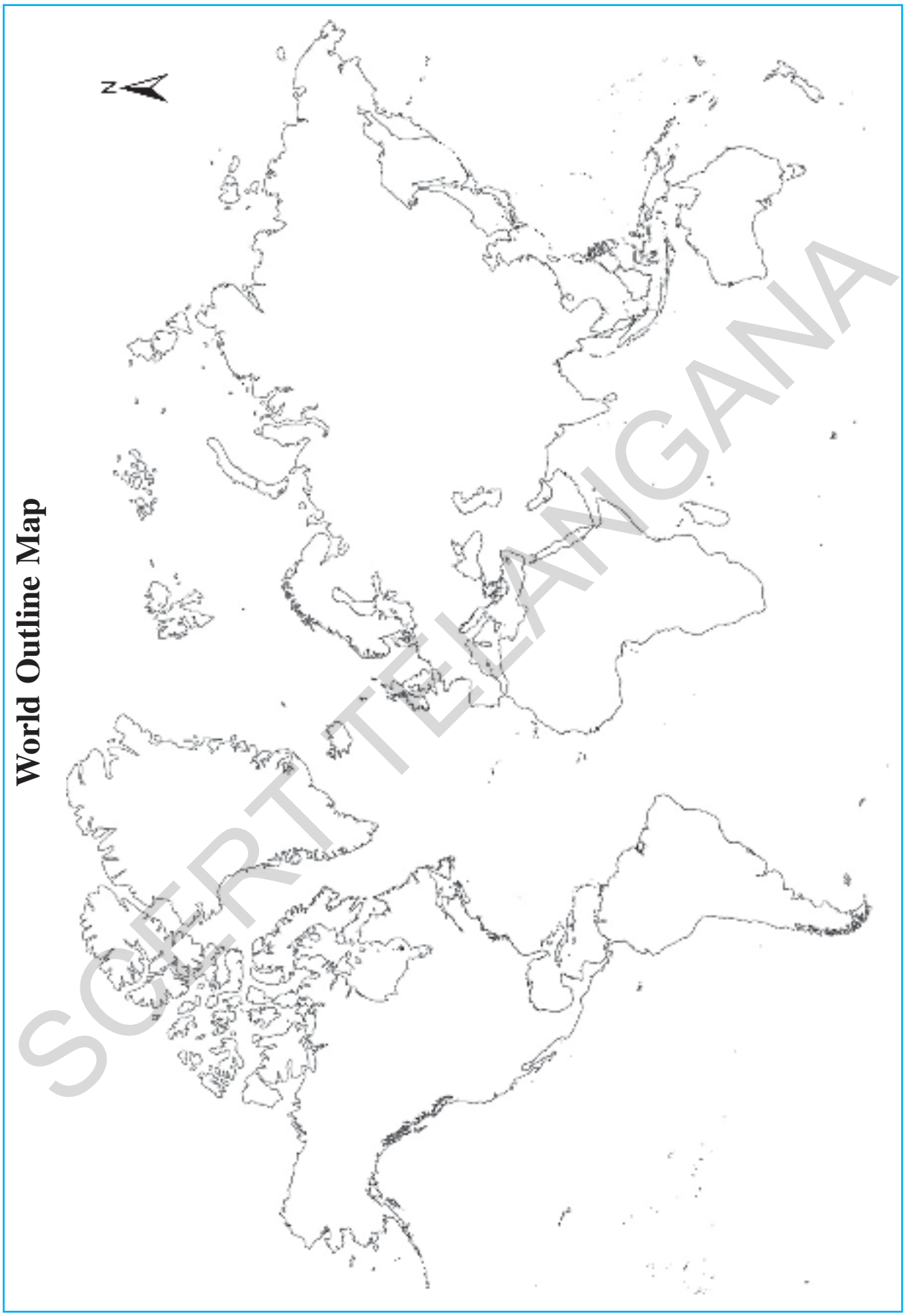

SCERT TELANGANA

India Physical Map

जनता

SCERT TELANGANA

India Practice Map

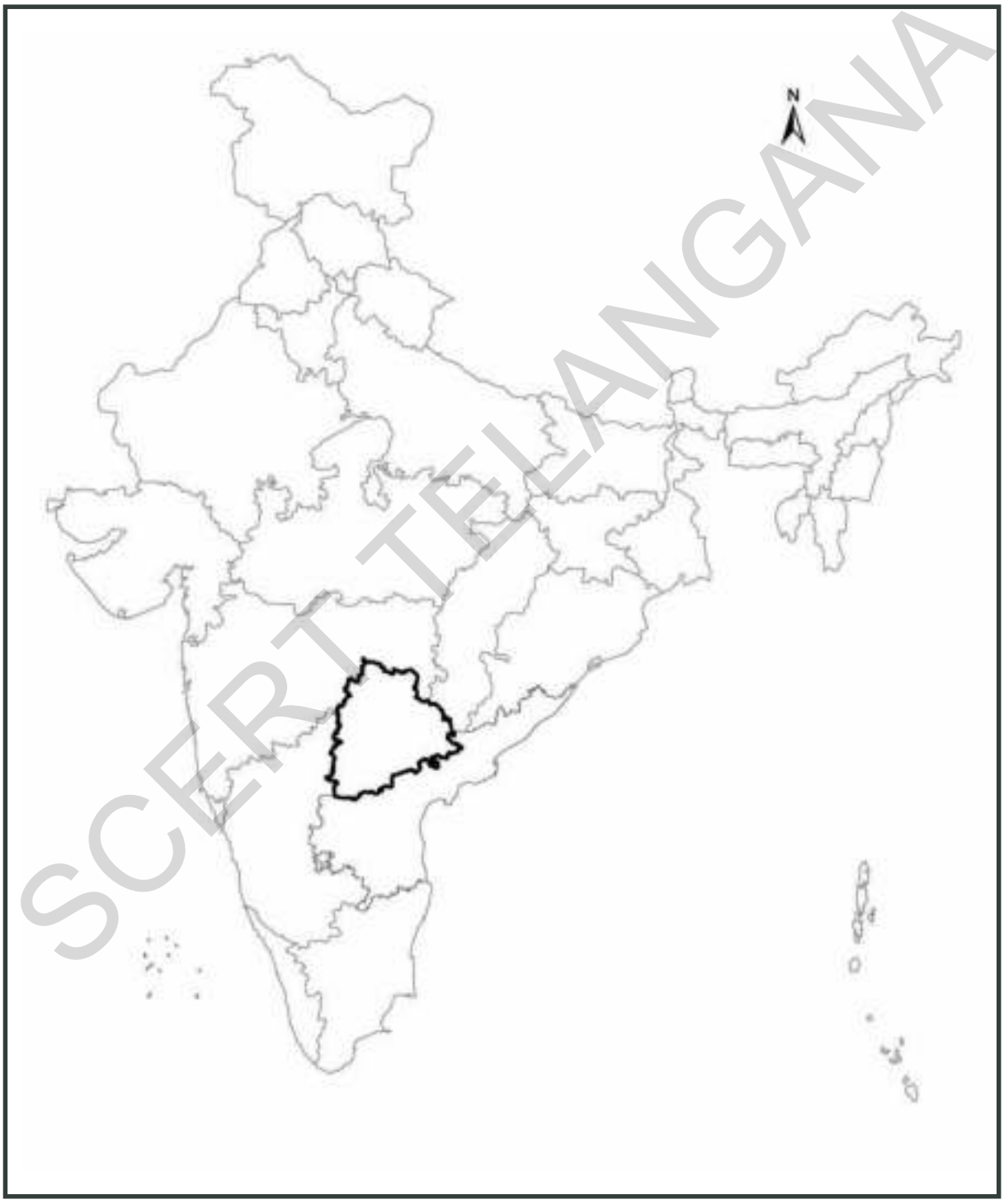

SCERT TELANGANA

India Physical Map

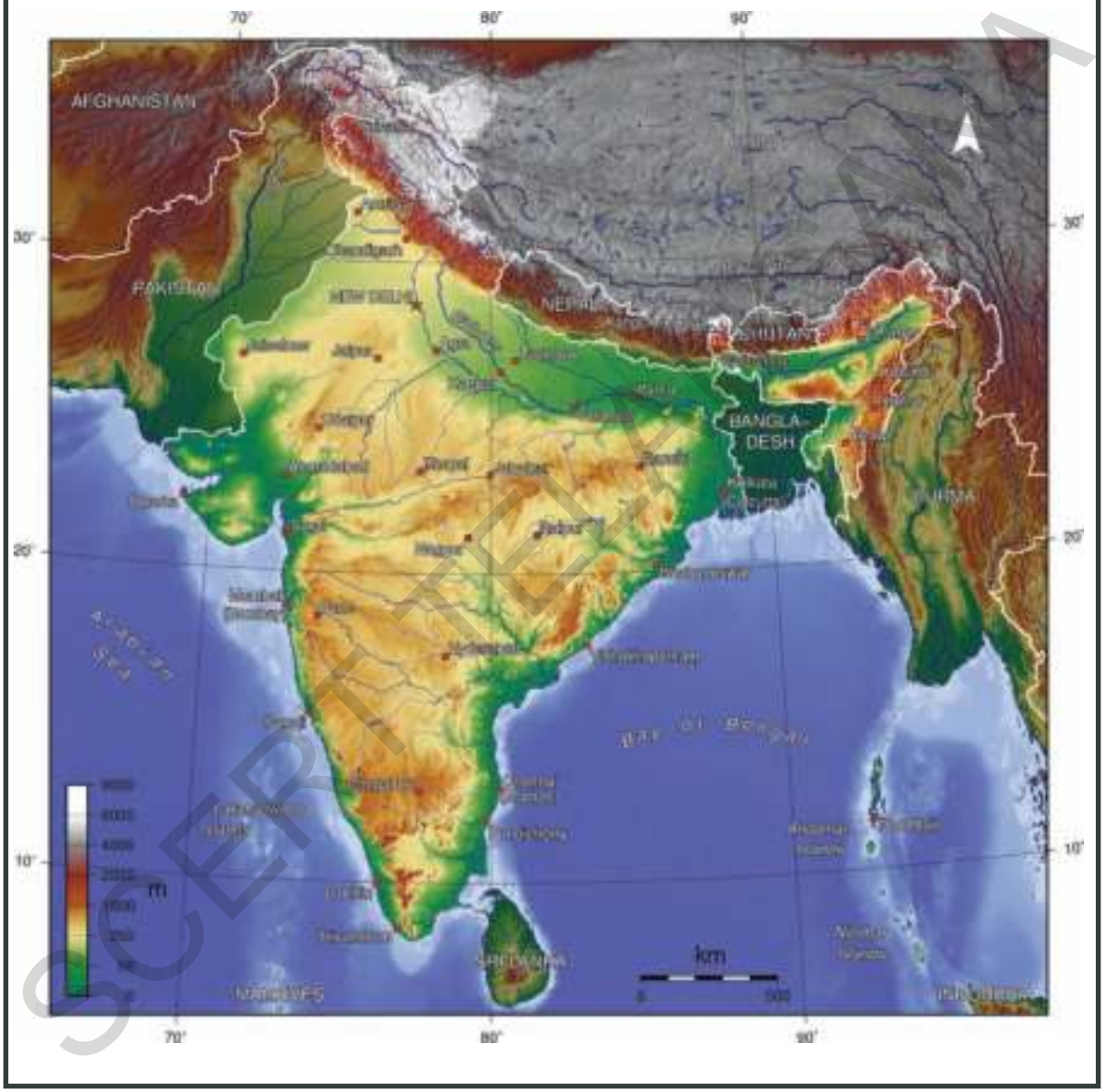

जनता